आधुनिक युग में परिवारों की भूमिका (ROLE OF FAMILY IN THE MODERN AGE)

आज हमारे देश में शिक्षा का उद्देश्य बच्चों की शारीरिक, मानसिक, चारित्रिक, नैतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक एवं उत्पादन कार्य में निपुण होकर लोकतन्त्र का सुयोग्य नागरिक बनाना है। देश का नैतिक पतन रोकने के लिये आज धार्मिक तथा आध्यात्मिक विकास की शिक्षा भी आवश्यक समझी जाने लगी है। परिवार हमें इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता करते हैं।

परिवार की मुख्य विशेषताएँ (CHIEF CHARACTERISTICS OF FAMILY)

1. सार्वभौमिकता (Universality)—संसार का कोई भी समाज ऐसा नहीं है जहाँ परिवार किसी-न-किसी रूप में न पाया जाता हो। परिवार एक सार्वभौमिक संस्था है। यह विश्व के कोने-कोने में पाई जाती है।

2. सीमित आकार (Limited Size)—परिवार एक छोटा सा सीमित आकार का होता है, इसके सदस्यों की संख्या सीमित होती है।

3. उत्तरदायित्व (Responsibility)—अपने पारिवारिक संगठन में प्रत्येक व्यक्ति की पारिवारिक जिम्मेदारी होती है।

4. सामाजिक संगठन का केन्द्र (Centre of Social Organisation)—परिवार सामाजिक संगठन का केन्द्र होता है। विभिन्न परिवारों से मिलकर समाज की रचना होती है। परिवार समाज की ही छोटी इकाई होती है।

5. सामाजिक गुणों का पालना (Cradle of Social Virtues)—बच्चे में सामाजिक गुण परिवार में रहकर ही विकसित होते हैं। परिवार सामाजिक गुणों की पालना है। परिवार का बच्चे के व्यक्तित्व पर बहुत प्रभाव पड़ता है।

6. जन्मजात प्रवृत्तियाँ पारिवारिक आधार के रूप में (Innate Tendencies as Basis of Family)—लैंगिक सम्बन्ध तथा माता-पिता का अपनी सन्तान से प्रेम आदि जन्मजात प्रवृत्तियाँ परिवार के निर्माण का आधार होती हैं।

7. संस्था के रूप में स्थायी (Permanent as Institution)—परिवार संस्था के रूप में स्थायी होती है।

विशिष्ट आवश्यकता वाले बालकों में परिवार की भूमिका (ROLE OF FAMILY IN SPECIAL NEED CHILDREN)

1. बच्चों का शारीरिक विकास (Physical Development of Children)—बच्चों का पालन-पोषण प्रायः परिवारों में ही होता है। भारत में तो बच्चों के पोषण का एक मात्र साधन परिवार ही होते हैं। पोषण संस्थान के रूप में परिवार बच्चों के खाने-पीने की व्यवस्था करते हैं, उनकी देखभाल करते हैं और रोगग्रस्त होने पर उनका इलाज करते हैं। शिक्षा के अभिकरण के रूप में ही बच्चों को ऐसा नियमित जीवन व्यतीत करने का प्रशिक्षण देते हैं जो स्वास्थ्य लाभ तथा उनकी रक्षा के लिये आवश्यक

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

होता है। बच्चे अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण कर समय पर उठना, खड़े होना तथा चलना और समय पर निद्रा लेना आदि सीखते हैं। इनसे उनका शारीरिक विकास होता है।

2. मानसिक विकास का अभिकरण (Agency of Mental Development)—प्रत्येक बच्चा कुछ जन्मजात शक्तियाँ लेकर पैदा होता है। इन्हीं शक्तियों के आधार पर उसका विकास होता है। बच्चों के मानसिक विकास के लिये यह आवश्यक है कि उन्हें विभिन्न परिस्थितियों में रखकर इन्द्रियानुभव कराया जाये। इस अनुभव के आधार पर उनमें जो बातें जानने की उत्कण्ठा हो उसका उचित समय उत्तर देकर उनकी जिज्ञासा को शान्त किया जाये और फिर उन्हें अभिव्यक्ति के लिये अधिक-से-अधिक अवसर प्रदान किये जायें। मानसिक विकास की ओर यह सबसे पहला पग होता है। परिवार में बच्चों को विभिन्न परिस्थितियों में अवलोकन करने, प्रत्येक नई बात को जानने, आपसी जिज्ञासा शांत करने तथा स्वतन्त्र अभिव्यक्ति के लिये माता-पिता का प्यार भरा वातावरण मिलता है। अभिव्यक्ति के लिये भाषा की आवश्यकता पड़ती है। इस भाषा को बच्चे परिवार में ही सीखते हैं। बच्चे जन्म से कुछ दिन बाद ही अपने परिवार के सदस्यों का अनुकरण कर भाषा सीखना प्रारम्भ कर देते हैं। यही कारण है कि बच्चे जिस भाषा के परिवार में जन्म लेते हैं और पलते हैं उसी की भाषा सीख जाते हैं। बच्चे के बौद्धिक विकास में पहेलियों तथा कहानियों का भी बड़ा हाथ होता है। हमारे भारतीय परिवारों में बूढ़ी दादी, नानी और अम्मा आदि का भी बड़ा महत्त्व होता है। हमारे भारतीय परिवारों में घर के वयस्क लोग बच्चों को स्तरानुकूल कहानियाँ सुनाकर उनकी कल्पना शक्ति विकसित करते हैं। पहेलियों द्वारा बच्चों का मानसिक व्यायाम कराया जाता है। यह बात कहने में किसी प्रकार का संकोच नहीं होना चाहिये कि शिक्षित परिवारों का शैक्षिक पर्यावरण बच्चों को उच्च मानसिक स्तर की ओर अग्रसर करने में बड़ा सहायक होता है। परन्तु अशिक्षित परिवारों में इस सबकी आशा करना व्यर्थ है। उनमें रह कर बच्चे न शुद्ध भाषा सीखते हैं और न तर्कपूर्ण विचार करना।

3. नैतिक विकास के अभिकरण के रूप में (As an Agency of Moral Development)—बच्चे कुछ मूल प्रवृत्तियाँ लेकर पैदा होते हैं। प्रारम्भ में भी उनका व्यवहार मूल प्रवृत्यात्मक होता है। परिवार के सदस्यों का अनुकरण करके वे अपने व्यवहार में परिवर्तन तथा परिमार्जन करते हैं। जिस परिवार का जैसा चारित्रिक एवं नैतिक स्तर होता है, बच्चों पर वैसा ही प्रभाव पड़ता है। जिन परिवारों के सदस्यों के बीच प्रेम, सहानुभूति और विश्वास आदि की भावना होती है उन परिवारों के बच्चे प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार का चारित्रिक प्रशिक्षण प्राप्त करते हैं। आदर्श पारिवारिक पर्यावरण में बच्चों में उत्तम चरित्र के लिये आवश्यक अच्छी आदतें और राष्ट्र के प्रति प्रेम के स्थायी भाव बनते हैं। ऐसे परिवारों में बच्चे आज्ञापालन, कर्तव्यपालन, सत्यता, ईमानदारी, दया, परोपकार और बलिदान जैसे उत्तम गुणों को ग्रहण करते हैं, जिन परिवारों का पर्यावरण धार्मिक होता है उन परिवारों के बच्चों में जो चारित्रिक एवं नैतिक की भावना का विकास होता है वह बहुत सुदृढ़ होता है। परिवारों का उच्च धार्मिक पर्यावरण बच्चों को सभ्य एवं शिष्ट बनाता है। यदि परिवारों का पर्यावरण दूषित होता है तो फिर उन परिवारों के बच्चे भी दूषित बनते हैं।

4. सामाजिक विकास (Social Development)—एक परिवार सर्वप्रथम, छोटा एवं मूलभूत सामाजिक समूह है। इस सामाजिक समूह के सामाजिक पर्यावरण में बच्चे प्रेम एवं सहानुभूतिपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं तथा इस प्रकार की शिक्षा प्राप्त करते हैं जहाँ पर वे एक-दूसरे की सहायता करना सीखते हैं। उचित तथा अनुचित ज्ञान प्राप्त करने की क्षमता का विकास भी परिवार में ही प्रारम्भ होता है। परिवार के बच्चे एक-दूसरे के साथ समायोजन करना सीखते हैं। बिना इन सब बातों के एक व्यक्ति सामाजिक नहीं बन सकता।

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner

परिवारों में रहते हुए भी बच्चे अन्य सामाजिक समूहों से दूर नहीं रहते। दो वर्ष की आयु होने पर घर से बाहर निकलकर खेलने-कूदने लगते हैं। जिन घरों में जितनी अधिक सामाजिक भावना होती है उन घरों में बच्चे उतनी ही अधिक सामाजिकता की ओर बढ़ते हैं। अपनी-अपनी संस्कृति तथा सभ्यता का ज्ञान बच्चे परिवारों में ही प्राप्त करते हैं। पारिवारिक जीवन के धार्मिक संस्कार भी बच्चों में सामाजिक गुणों का विकास करते हैं।

5. भावात्मक विकास (Emotional Development)—परिवार बच्चों के भावात्मक विकास का आधार है। माता-पिता को चाहिये कि वे बच्चों का पूर्ण स्नेह प्रदान करें ताकि उनमें भावात्मक संरक्षण की भावना का विकास हो। माता-पिता को सहानुभूतिपूर्ण होना चाहिये और उन्हें बच्चों की विभिन्न समस्याओं का उचित समाधान प्रदान करना चाहिये। बच्चों को यह अनुभव नहीं होने देना चाहिये कि उनकी अवहेलना होती है और वे अवांछित बच्चे हैं। माता-पिता को परिवार में मैत्रीपूर्ण ढंग से रहना चाहिये। उन्हें अपनी भावनाओं पर नियन्त्रण रखना चाहिये क्योंकि भावनाएँ सदा ग्रहण की जाती हैं, सिखाई नहीं जाती।

6. नागरिक विकास (Civic Development)—बच्चा उच्च नागरिकता का प्रथम पाठ माता के चुम्बनों और पिता के आलिंगनों से सीखता है। बच्चा परिवार से कई नागरिक गुणों को सीखता है। यह परिवार ही है जो बच्चे को अपने कर्तव्य एवं दायित्व को पहचानने और निभाने में सहायता प्रदान करता है। यह बच्चे में अनुशासन, सहयोग तथा सहनशीलता के गुणों को विकसित करता है।

Scanned by TapScanner
Scanned by TapScanner